10-2

॥ श्रीः ॥

संध्योपासन-भाषाटीका ।

देवर्षिपितृतर्पणसमेत ।

जिसको

डिपुटी लोचनप्रसादशर्माकी आज्ञानुसार रुडकी धर्मसभोपदेशक पं०यमुनादत्तजीने सर्वसाधारण जनोंके हितार्थ निर्माण किया ।

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन,

स्वकीय "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें

मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

भूमिका।

आजकल कलिकालके प्रभावसे भारतवर्षीय आर्यसंतान लोग आलस्य वश होकर अपने नित्य कर्मसे विमुख होरहे है और दिन प्रतिदिन अपने नित्यकर्मके ज्ञानसे रहित होते चले जाँयहैं और जो कोई जाननेका उत्साह भी करताहै तो संस्कृत विधान न जाननेके कारण चुपचाप रह जाताहै क्योंकि हमारे धर्मकर्म्मके सब पुस्तक संस्कृतमें हैं इस कारण मैं रुडकी "धर्म्मरक्षिणि सभा" की प्रेरणासे अति संक्षेप करके सुगमतासे जानने लायक नित्य कर्मविधि प्रकाशित करताहूं इसमें प्रथम सबसे ऊपर मंत्र लिखेजायँगे तिसके नीचे भाषामें विधि यानी जिस मंत्रसे जिस तरह जो कर्म करना चाहिये सो लिखे जायँगे तिसके नीचे भाषामें मंत्रोंका अर्थ लिखाजायगा केवल ऊपर लिखे मंत्रोंको कंठस्थ करनेसे नित्यकर्मको मनुष्य सुगमतासे करसकेगा नित्यकर्मोंमें प्रथम संध्यावंदनहै इस कारण प्रथम संध्याविधि लिखी जाती है यह उद्योग केवल परोपकारके लिये है इसमें जो कुछ भूल चूकहो महाशय सज्जन कृपाकरके क्षमाकरैं.

आपका कृपापात्र-

पं०-यमुनादत्त.

कर्मक्रम-सूची।

१ अपने ऊपर जल छिडके
२ आचमन
३ चोटीमें गिरह
४ आचमन
५ अपने चारोंतरफ जलफेरे
६ प्राणायामके विनियोग
७ प्राणायाम
८ विनियोग
९ आचमन
१० विनियोग
११ मार्जन
१२ विनियोग
१३ शिरपर जलछोडे
१४ विनियोग
१५ नाकके जललगाके छोडे
१६ विनियोग
१७ आचमन
१८ सूर्यको अर्घ्य
१९ उपस्थानविनियोगसहित
२० अंगन्यास
२१ गायत्रीका आवाहन
२२ गायत्रीका जप
२३ गायत्रीका विसर्जन

यह भी जानना चाहिये कि विनियोगका यह काम है कि हाथमें जललेकर विनियोगको पढकर छोडदे या विनियोगको खालीपढ़दे विनियोग मंत्रके ऋषि आदिका स्मरण करना है.

श्रीः ।

अथ संध्योपासनविधिः ।

भाषाटीकासमेतः ।
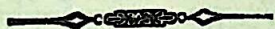
ॐअपवित्रःपवित्रोवासर्वावस्थांगतोपिवा।यःस्म रेत्पुंडरीकाक्षंसबाह्याभ्यंतरःशुचिः ॥ ॐऋतंच सत्यंचाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ॥ ततोरात्र्यजाय त ततःसमुद्रोअर्णवः ॥ समुद्रादर्णवादधिसंवत्स रोअजायत। अहोरात्राणिविदधद्विश्वस्यमिषतोव शी ॥ सूर्य्याचन्द्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत् ॥

पहिले अपवित्र इस मंत्रसे अपने ऊपर जल छिडके फिर आचमन करै फिर ॐकारसहित गायत्री मंत्रसे चोटीमें गिरह लगावे परंतु यहाँ इतना और समझ लेना चाहिये कि जो चोटीमें पहिलेसे गिरहलगी हुई हो तो मंत्र पढनेकी या गिरह लगानेकी कुछ जरूर नहीं फिर गायत्री पढ़कर जल अपने चारोंतरफ फेरै फिर (ऋतंच) इस ऊपर लिखे मंत्रसे आचमन

मंत्रार्थ—सब तरफसे प्रकाशमान परमात्मासे (ऋतम्) वेद

दिवंचपृथिवींचांतरिक्षमथो स्वः॥ ॐकारस्य ब्र ह्माऋषिर्गायत्रीछंदोग्निर्देवताशुक्लोवर्णः सर्वक र्म्मारंभेविनियोगः॥ १॥ सप्तव्याहृतीनांप्रजाप तिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्बृहतीपंक्तित्रिष्टुब्जगत्य करे फिर जल हाथमें लेकर प्रथम * विनियोगको पढे पढकर जल हाथसे छोड़ दे ऐसेही दूसरे विनि-

---

और (सत्यं) प्रधान जिसको प्रकृतिभी कहते हैं उत्पन्न हुआ और तिसही परमात्मासे रात्रि हुई अर्थात् प्रलय रात्रि हुई और तिसही परमात्मासे जलयुक्त समुद्र उत्पन्न हुआ और जलयुक्त समुद्र उत्पन्न होनेके पीछे संवत्सर यानी संवत्सरात्मक सम्पूर्ण काल उत्पन्न हुआ लोकोंकी रचना करता हुआ जगत्का स्वामी सूर्य और चंद्रमा स्वर्ग और पृथिवी और आकाश इन सबको पहिले कल्पके समान रचताभया अर्थात् जैसी व्यवस्था पूर्व सृष्टिमें थी उसी व्यव-स्थासे सबको रचे, प्रथम विनियोगका अर्थ, ॐकारका ब्रह्मा-ऋषि है गायत्री छंदहै अग्नि देवता है शुक्ल वर्ण है समस्त कर्म्मोंके आरंभमें विनियोग है याने सब कर्मोंके शुरूमें ॐकारका उच्चारण किया जाताहै सातों व्याहृतियोंके प्रजापति ऋषि है

श्छंदांस्यग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेंद्रविश्वदे
वादेवताअनादिष्टप्रायश्चित्तेप्राणायामेविनियो
गः गायत्र्याविश्वामित्रऋषिर्गायत्रीच्छंदःसविता
देवताग्निर्मुखमुपनयनेप्राणायामेविनियोगः॥३॥
शिरसः प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिपदागायत्रीछंदोब्रह्मा
ग्निर्वायुःसूर्योदेवतायजुःप्राणायामेविनियोगः ४
योग मंत्रको पढकर दुबारा हाथमें जल लेकर छोडदे
इसी प्रकार तीसरीबार हाथमें जल लेकर तीसरे *
विनियोग मंत्रको पढकर छोड दे ऐसेही चौथी बार
हाथमें जल लेकर चतुर्थ विनियोगको पढकर जल
हाथसे छोडदे इस प्रकार चारों विनियोगोंको कर-
के इस प्रकार * प्राणायाम करे कि पहिले पलौथी
मारके बैठे आँख मूंदले मौन धारण करले फिर

गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप्, जगती ये
छंद हैं. अग्नि, वायु, आदित्य, बृहस्पति, वरुण, इंद्र, विश्वेदेवा
ये देवता हैं. अनादिष्टप्रायश्चित्त प्राणायाममें इनका विनि-
योग है २ गायत्रीका विश्वामित्र ऋषि है गायत्री छंदहै सवि-
ता देवता है अग्नि मुख है उपनयन प्राणायाममें विनियोग है
शिरसः इस मंत्रका प्रजापति ऋषिहै त्रिपदा गायत्री छंद है.
ब्रह्मा, अग्नि, वायु, सूर्य्य ये देवतायजु हैं प्राणायाममें इसका

प्राणायाममंत्रः ॥ ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यं ॐतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यधीमहि ॥ धियोयोनःप्रचोदयात्॥

दोनों बीचकी अंगुली नासिकाके बाँये नथुनेपर रखके बाँये नथुनेको दबाले और दाहिने नथुनेसे धीरे धीरे श्वास ऊपरको खींचताजाय और मनही-मनमें प्राणायाम मंत्रको पढताजाय इसको पूरक प्राणायाम कहते हैं । इसके करते समय नील कम-लके समान श्याम चतुर्भुज विष्णुमूर्तिका नाभिमें ध्यान करे तबतक श्वास ऊपरको खींचता रहे जब-तक कि प्राणायामका मंत्र पूरा पढचुके तब अँगूठेसे दाहिनी नासाकोभी बंदकरले और श्वास रोककर मनहीमन प्राणायाममंत्रको पढे और हृदयमें रक्तवर्ण चतुर्मुख ब्रह्माकी मूर्तिका ध्यान करता रहे उसको कुंभकप्राणायाम कहते हैं जब इसको करते हुये मंत्र पढचुके तब फिर बाँई नासापरसे दोनों अंगुली हटाले और दाहनी नासाको अँगूठेसे बंद रक्खे बाँई नासासे धीरे धीरे श्वास उतारता जाय और प्राणायाम मंत्रको पढता जाय॰ जब मंत्र पूर्ण

विनियोगहै ॥ अब प्राणायाम मंत्रका अर्थ लिखतेहैं (सवितुः)

ॐ आपोज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवःस्वरोम् ॥ १ ॥
होजाय तब प्राणायाम समाप्त जानना इस श्वासके उतारनेका नाम रेचकहै रेचक करते समय स्फटिकके समान श्वेतवर्ण महेश्वर मूर्तिका मस्तकमें ध्यान करे इस प्रकार पूरक कुंभक रेचक करनेसे एक प्राणायाम होता है जो सामर्थ्य हो तो इसी प्रकार तीन वार करे और यह प्राणायामका मंत्र तीन मंत्रों करके बना हुआ है व्याहृती गायत्री आपोज्योति इसकी समाप्ति स्वरोंतकहै इस प्रकार

सब स्थावर जंगमोंके पैदा करनेवाले (देवस्य) निरतिशय प्रकाश युक्तके (तस्य) तिस (वरेण्यं) वरणीय प्रार्थना करने योग्य या सत्पुरुषों करके निरंतर ध्यान करने योग्य (भर्गः) भजनेवालोंके पाप नष्ट करनेवाले तेजका हम (धी-महि) ध्यान करतेहैं (यः) जो (नः) हमारी (धियः) बुद्धियोंको श्रेष्ठ कर्म्मोंमें (प्रचोदयात्) प्रेरे यानी नेक कामों-में हमारी बुद्धियोंको लगावे कैसा वह तेज है कि भूः १ भुवः २ स्वः ३ महः ४ जनः ५ तपः ६ सत्यम् ७ इन सातों लोकोंमें व्याप्त या ये सातों लोकहैं स्वरूप जिसका फिर कैसा वह तेजहै (आपः) जलस्वरूपहै (ज्योतिः) ज्योतीरूपहै (रसः) रसरूपहै (अमृतम्) मोक्षरूपहै (ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्) भूः भुवः स्वः ये सब ब्रह्म है ।

सूर्य्यश्चेत्यस्यब्रह्मर्षिः प्रकृतिश्छंदः सूर्य्योदेवताअपामुपस्पर्शनेविनियोगः ॥ ॐसूर्य्यश्चमामन्युश्चमन्युपतयश्चमन्युकृतेभ्यः ॥ पापेभ्योरक्ष-

प्राणायाम समाप्त करके फिर हाथमें जल लेकर सूर्य्यश्च इस विनियोगको पढकर छोडदे फिर सूर्य्यश्च इस मंत्रको पढकर आचमन करे परंतु इस मंत्र करके प्रातःकालकीही संध्यामें आचमन किया जाताहै मध्याह्न सायंकालकीमें नहीं प्रातःकाल मध्याह्न सायंकालकी संध्यामें पहिले कहा हुआ प्राणायामतक सब कर्म बराबरही किया जाता है परंतु फरक केवल

या ब्रह्मकरके व्याप्तहैं या व्याख्या प्राणायाम मंत्रकी हो चुकी । सूर्य्यश्च इस मंत्रका ब्रह्मा ऋषिहै प्रकृति छंदहै सूर्य्य देवताहै जलके उपस्पर्शनमें विनियोगहै ॥ प्रातःकालको संध्याके आचमनके मत्रकी व्याख्या ॥ सूर्य और (मन्यु) यज्ञ और (मन्युपतयः) यज्ञपति इंद्रादिक अथवा क्रोध और क्रोधपति इन्द्रियाँ (मन्युकृतेभ्यः) क्रोधसे कियेहुये (पापेभ्यः) पापोंसे (मा) मेरी (रक्षन्तां) रक्षाकरे यानी ऐसा क्रोध मुझको नहो जिससे कि में न करने लायक का

न्तां ।यद्रात्र्यापापमकार्षं॥मनसावाचाहस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेणशिश्ना ॥ रात्रिस्तदवलुम्पतु ॥ यत्किंचिद्दुरितं मयि॥ इदमहमापोऽमृतयोनौसूर्य्ये ज्योतिषिजुहोमिस्वाहा १इतिप्रातः । आपः पुनंत्विति विष्णुर्ऋषिरनुष्टुप्छंदआपो देवताअपामु-

प्राणायामके वादके इस आचमनमें है प्रातः कालकी संध्यामें इस मंत्रसे आचमन किया जाता है और मध्याह्नकी संध्यामें आपःपुनंतु इस मंत्र करके और सायंकालमें अग्निश्च इस मंत्रकरके आचमन करे जैसे कि, प्रातःकालकी संध्यामें

मको करूं (यत्) जो (पापं) पाप मैंने (रात्र्यां) रात्रिमें (मनसा) मन करके (वाचा) वाणी करके (हस्ताभ्यां) हाथों करके (पद्भ्यां) पैरों करके (उदरेण) उदरकरके (शिश्ना) शिश्न करके यानी लिंगेन्द्रिय करके (अकार्षं) किया है (तत्) तिस मेरे पापको (रात्रिः) रात्रि (अवलुम्पतु) नष्ट करे (यत्किंचित्) जो कुछ (दुरितं) पाप (मयि) मेरेमेंहै (इदंआपः) सो यह जलहै इसको (अहं) मैं हृदयकमलमें स्थित (अमृतयोनौ) अमृतकी योनि (ज्योतिषि) ज्योतिःस्वरूप (सूर्य्ये) सूर्य्यके विषय (जुहोमि) हवन करताहूं (स्वाहा) शोभन हवनहो यानी वह पाप नष्ट होजाय फिर मुझसे न बन पडे ॥ आगे मध्याह्नके आचमन मंत्रकी

पस्पर्शने विनियोगः ॥ ॐआपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवीपूता पुनातु माम् ॥ पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम् ॥ यदुच्छि-ष्टमभोज्यञ्च यद्वा दुश्चरितं मम ॥ सर्वंपुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहंस्वाहा इतिमध्याह्नः॥

सूर्यश्च इस मंत्र करके आचमन किया वैसेही माध्या-ह्निक संध्यामें प्राणायाम करनेके बाद आपः पुनन्तु

व्याख्या लिखतेहैं, (आपः) जल (पृथिवी) इस मेरे पा-र्थिव शरीरको (पुनन्तु) पवित्रकरे और (पृथ्वीपूता) पवित्र हुआ देह (मां) मुझे क्षेत्रज्ञको (पुनातु) पवित्रकरे किंतु जल केवल पृथिवीहीको न पवित्रकरे (पुनंतु ब्रह्मणस्पतिं) ज्ञानके पति आत्माकोभी पवित्रकरे (ब्रह्मपूता) पवित्र हुआ ब्रह्म (पुनातुमां) मुझे पवित्रकरे (यदुच्छिष्टं) जो झूठा और (अभोज्यं) नखाने योग्य हमने खाया हो या जो (दुश्चरि तंमम) हमारा बुरा काम है या जो (असतांच प्रतिग्रहं) न लेने लायक दान लियाहो (सर्व) इन सबोंसे (आपः मां पुनन्तु) जल मुझको पवित्र करे यानी आचमन द्वारा हमारा सब पाप

अथसायंसंध्याचमनमंत्रः ॥ अग्निश्चमेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छंदोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ॥ ॐअग्निश्च मामन्युश्चमन्युपतयश्चमन्युकृतेभ्यः ॥ पापेभ्योरक्षन्तां ॥ यद्‌ह्ना पापमकार्षं॥मनसा वाचा हस्ताभ्यां ॥ प-

इस मंत्र करके आचमन करे और सायंकालमें अग्निश्च इस ऊपर लिखे मंत्रसे आचमन करे इतनाही फरक है बाकी सब काम तीनों कालोंमें समान है इस प्रकार आचमन करके फिर हाथमें जल लेकर आपो इस ऊपर लिखे विनियोगको पढ़कर जल

स्वाहा होजाय कि फिर हमसे न वन पडे * अग्निश्च इस मंत्रका रुद्र ऋषिहै प्रकृति छंद है अग्निदेवता है आचमन करनेमें विनियोगहै, अग्नि और यज्ञ और यज्ञपति इंद्रादिक अथवा क्रोध और क्रोधपति इंद्रियाँ क्रोधसे किये हुये पापोंसे मेरी रक्षाकरें यानी ऐसा क्रोध मुझको नहो जिससे कि न करने लायक कामको करूं और जो पाप मैंने दिनमें मन करके

ह्यामुदरेण शिश्ना॥अहस्तदवलुम्पतु॥यत्किञ्चि-
द्दुरितं मयि॥इदमहमापोऽमृतयोनौ सत्येज्यो-
तिषि जुहोमिस्वाहा॥इतिसायम्॥आपोहिष्ठेत्या-
दि त्र्यृचस्य सिंधुद्वीप ऋषिर्गायत्रीछंद आपो
देवतामार्जने विनियोगः॥ॐआपोहिष्ठा मयो
भुवः ॥१॥ तान ऊर्जेदधातन ॥२॥ महे-
हाथसे छोडदे फिर आपोहिष्ठा इत्यादि सात मंत्रोंसे
अपने शिरपर जल छिडके एक एक मंत्र बोलता जाय

वाणी करके हाथों करके पैरों करके उदर करके लिंगेन्द्रिय
करके किया है तिस मेरे पापको दिन नष्ट करे और जो कुछ
पाप मेरेमें हैं सो यह जल है इसको मै सत्य जोतिः परमा-
त्माके विषय हवन करताहू सो शोभन हवन हो यानी वह पाप
नष्ट होजाय फिर मुझसे न बन पडे * आपोहिष्ठा इत्यादि इन
तीनों ऋचोंका सिंधुद्वीप ऋषि है गायत्री छन्द है जलदेवता मार्ज-
नमें विनियोगहै ॥ आपोहिष्ठा इत्यादि ये तीन ऋचाहैं तिनके
नौपाद हैं तिनका अर्थ ॥ हे (आपः) जल (हि) जिस-
कारण तुम (मयोभुवः) सुखके देनेवाले (स्थ) हो तिस-
कारण (नः) हमें (ऊर्ज्जे) बलकारक अन्नके (दधात)

रणायचक्षसे ॥ ३ ॥ योवःशिवतमोरसः ॥ ४॥ तस्यभाजयतेहनः ॥५॥उशतीरिवमातरः॥६॥त स्माअरंगमामवः॥७॥यस्यक्षयायजिन्वथ ॥८॥ आपोजनयथाचनः ॥९॥ ॐद्रुपदादिवेतिकोकि और जल छिडकता जाय फिर आठवेंसे पृथिवीको छिडके नवेंसे फिर शिरको छिडके फिर हाथमें जल

देनेवालेहो और (महेरणाय) महारमणीयके यानी ब्रह्मके (चक्षसे) दर्शन योग्य हमें करो अर्थात् जैसे हम बलयुक्त और ब्रह्म साक्षात्कारमें समर्थ हों वैसा करो ॥) जल (उशतीः) पुत्र सुखके चाहनेवाली (मातरइव) माताके समान आप (योवः) जो तुम्हारा (शिवतमोरसः) कल्याणरूपरंस है (इह) इस लोकमें (तस्य भाजयत) तिस रसके भागी (नः) हमें करो अर्थात् पुत्र स्नेहवाली माता जैसे लड़केको अपना दूध पिलाके कल्याणयुक्त करती है तैसेही तुमभी अपने रससे हमको कल्याणयुक्त करो (आपः) हे जल (यस्य क्षयायजिन्वथ) जिस जगत्के आधारभूत रसके एक अंशसे आप जगत्को तृप्त करते हैं (तस्मा अरंगमामवः) तिस तुम्हारे रससे हम सदा तृप्तहों और (आपोजनयथाचनः) हे जल आप हमको उस रसके भोगनेमें समर्थ करो ॥ द्रुपदादिव इस मंत्रका कोकिल राजपुत्र ऋषि है अनुष्टुप् छंद है सौत्रा-

लोराजपुत्रऋषिरनुष्टुप्छंदः सौत्रामण्यवभृथेवि- नियोगः॥ ॐद्रुपदादिवमुमुचानःस्विन्नःस्नातोम- लादिव॥ पूतंपवित्रेणेवाज्यमापःशुन्धन्तुमैनसः ६ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षणऋषिरनुष्टुप्छंदः भा ववृत्तोदेवताअश्वमेधावभृथे विनियोगः ॥ ॐ ऋतंचसत्यंचाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततोरा- लेकर द्रुपदा इस विनियोगको पढकर जल हाथसे छो- डदे फिर हाथमें लेकर द्रुपदादिव इसमंत्रको पढ- कर जलको माथेसे लगाकर छोडदे फिर हाथमें जल लेकर अघमर्षण इसविनियोगको पढकर छोडदे फिर हाथमें जल लेकर नासिकासे लगाकर (ऋतंच) इस मंत्रको तीनबार या एकबार पढकर उस जलको अपने

मणि अवभृथमें इसका विनियोगहै ॥ द्रुपदादिव इस मंत्रका अर्थ ॥ (द्रुपदादिव मुमुचानः) जैसे पादुकासे अलग होता हुआ पादुका दोषसे रहित होताहै और (स्विन्नः स्नातः मला- दिव) जैसे पसीना आयाहो जिसको वह स्नान करके मलसे रहित होताहै और (पूतंपवित्रेणेवाज्यम्) जैसे तपानेसे घी शुद्ध होताहै तैसेही (आपःशुन्धन्तुमैनसः) जल मुझको पापसे शुद्ध करे * अघमर्षण सूक्तका अघमर्षण ऋषि अनुष्टु

ऽयजायतततःसमुद्रोअर्णवः॥समुद्रादर्णवादधिसं वत्सरोअजायत॥अहोरात्राणिविदधद्विश्वस्यमि- षतोवशी ॥सूर्य्याचंद्रमसौधातायथापूर्वमकल्पय त्॥दिवंचपृथिवींचांतरिक्षमथोस्वः ॥ अंतश्चरसी तितिरश्चीनऋषिरनुष्टुप्छंदः आपोदेवताअपामुप- स्पर्शने विनियोगः ॥ ॐअंतश्चरसिभूतेषुगुहायां विश्वतोमुखः ॥ त्वंयज्ञस्त्वंवषट्कारआपोज्यो- तीरसोमृतम् ॥

शरीरसे निकला हुआ अपना पाप समझकर अपने बांई तरफ गेर दे फिर हाथमें जल लेकर अंतश्चरसीति

पूछंदहै भाववृत्त देवता है अश्वमेध अवभृथमें इसका विनियोग है ॥ ऋतं च इस मंत्रका अर्थ पहिले लिख चुकेहैं ॥ अंतश्चरसि इस मंत्रका तिरश्चीन ऋषिहै अनुष्टुप् छंदहै जलदेवताहै जलके उपस्पर्शनमें विनियोगहै ॥ अंतश्चरसि इस मंत्रका अर्थ ॥ हे जल ! तुम भूतमात्रके बीचमें विचरतेहो इस ब्रह्माण्डरूप गुहामें सब तर्फ आपकी गतिहै और तुमही यज्ञ और वषट्कार हो और तुमही जलरूपहो ज्योतिःस्वरूपहो रसरूपहो अमृतरूपहो

उद्वयमित्यस्यप्रस्कण्वऋषिरनुष्टुप्छंदः सूर्यो देवतासूर्य्योपस्थानेविनियोगः ॥ ॐउद्वयन्तम सस्परिस्वः पश्यन्तउत्तरं। देवंदेवत्रासूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥ उदुत्यमित्यस्यप्रस्कण्वऋषि रनुष्टुप्छंदः सूर्य्यो देवतासूर्य्योपस्थानेविनियो इस विनियोग मंत्रको पढकर छोडदे फिर अंतश्चरसि इस मंत्रको पढकर आचमन करे फिर ॐभूर्भुवः स्वः इति गायत्री मंत्रको पढकर दोनों हाथोंसे एकबार सूर्य्यको अर्घ्यदे फिर सूर्यके सामने मुख करके खड़ा होकर एक पैरसे वा एक पैरकी अगाड़ी सिर्फ पृथिवीसे लगी रहै दूसरा पैर संपूर्ण टिका रहे प्रातःसंध्यामें और सायंसन्ध्यामें दोनों हाथ मिलाके पसारके सूर्य्यके सामने खड़ा और मध्याह्नसंध्यामें दोनों हाथ ऊपरको करके सूर्यके सामने खड़ा होकर उद्वय यहाँसे लेकर

(वयं) हम (तमसः उत्) अंधकार रूपभूलोकसे ऊपर विराजमान (स्वः) स्वर्गलोकको (परिपश्यंतः) देखते हुये और (देवं सूर्य्यं) देवसूर्य्य (उत्तरं) उत्कृष्टतरको देखते हुये (देवत्रा) देव करके रक्षित हुये (उत्तमं ज्योतिः) उत्तम

गः ॥ उदुत्यंजातवेदसंदेवंवहंतिकेतवः ॥ दृशे विश्वायसूर्य्यम् ॥२॥ चित्रमित्यस्यकौत्सऋषिः त्रिष्टुप्छंदः सूर्य्योदेवतासूर्य्योपस्थानेविनियो- गः ॥ ॐचित्रंदेवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ॥ आप्राद्यावापृथिवीमंतरिक्षꣳ सूर्य्यआत्माजगतस्तस्थुषश्च ॥ ३ ॥ शतंभूयश्च शरदः शतात् । यहाँतक जो चार

ज्योतिस्वरूप ब्रह्मको (अगन्म) प्राप्त होंय॥ दूसरे मंत्रका अर्थ (केतवः) बुद्धिके वढानेवाली किरण (जातवेदसं) उत्पन्न हुआ कर्मफल जिससे ऐसे (त्यंदेवंसूर्य्यं) प्रसिद्ध सूर्य्यदेवको (दृशेविश्वाय) संसारके देखनेके लिये (उद्वहंति) ऊपरको लिये चलती हैं ॥ १ ॥ तीसरे मंत्रका अर्थ (चक्षुर्मित्रस्यवरुणस्याग्नेः) मित्र, वरुण और अग्निदेवताके नेत्ररूप इन तीनोंहीके नहीं वल्कि समस्त जगत्के नेत्ररूप क्योंकि सूर्य्यके प्रका- शसेही सब देखते है इस कारण सबके नेत्ररूप और (देवानां अनीकं) दीप्तियुक्त किरणोंके पुंज और जो (आप्राद्यावापृथिवीमंतरिक्ष ꣳ) स्वर्ग पृथिवी आकाशको अपनी किरणों करके व्याप्त करते हैं और (जगतस्तस्थुषश्चआत्मा) स्थावर जंगम विश्वके अंतर्यामी ऐसे सूर्य्य (चित्रं उदगात्) आश्चर्यके साथ उदय हुये

तच्चक्षुरित्यक्षरातीतपुरउष्णिक्छन्दो दध्यङ्ङाथर्वणऋषिःसूर्य्यो देवता सूर्य्योपस्थानेविनियोगः ॥ ॐतच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ॥ पश्येमशरदः शतंजीवेमशरदः शतꣳ शृणुयाम शरदःशतं प्रब्रवाम शरदः शतमदी

मंत्र और चार विनियोग ऊपर लिखे हैं इनको पढ-

आश्चर्य यही है कि, उदय होतेही रात्रिके अंधकारको और गणोंकी ज्योतिको हरलेते हैं॥ ३ ॥ चतुर्थ मंत्रका अर्थ (तच्चक्षुः) सो जगतके नेत्ररूप (देवहितं) देवताओंके हितकारक (शुक्रं) दीप्तिमान्सूर्य (पुरस्तात्) पूर्वदिशामें (उच्चरत्) उदय हुये तिनकी कृपासे (पश्येम शरदःशतं) हम सौ वर्षतक देखें यानी हमारी आंख सौ वर्षतक अच्छी बनी रहें और (जीवेम शरदः शतं) सौ वर्षतक जीवें यानी सौ वर्षतक हमारा जीवन पराये आधीन नरहे और (शृणुयामशरदः शतं) सौ वर्षतक हम सुने यानी सौ वर्षतक हमारी सुननेकी ताकत अच्छी बनी रहे (प्रब्रवाम शरदः शतं) और सौ वर्षतक बोलें यानी सौ वर्षतक हमारी बोलनेकी ताकत बनी रहे (अदीनाः

नाः स्याम शरदःशतं भूयश्च शरदः शतात्॥ १॥
ॐ हृदयायनमः १ ॐभूःशिरसेस्वाहा २ ॐभुवः शिखायै वषट्३ ॐस्वः कवचायहुं४ ॐभूर्भुवः नेत्राभ्यां वौषट्५ॐभूर्भुवः स्वः अस्त्रायफट्
ॐतेजोसीति देवाऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्रीछन्दोगायत्र्याहने विनियोगः ॥ ॐतेजोसिशुक्र
इसको उपस्थान कहते हैं ॐहृदयाय नमः इत्यादि छः मंत्रोंकरके अंगन्यास करे यानी पहिला मंत्र पढकर हृदयके हाथ लगावे दूसरा पढकर शिरके हाथ लगावे तीसरा पढकर चोटेके हाथ लगावे चौथा पढकर दोनों भुजाओंके हाथ लगावे पांचवां पढकर नेत्रोंके हाथ लगावे छठा पढकर अपने चारों तरफ चुटकी बजावे इस प्रकार तीनवार करे फिर तेजोसि

स्यामशरदः शतं) और सौ वर्षतक किसीसे दीनता नछरें न केवल सौही वर्षतक वल्कि (भूयश्च शरदः शतात्) सौसे भी अधिक वर्षतक हम देखें जीवें सुने बोलें अदीनरहें यह चारों उपस्थान मंत्रोंका अर्थ होचुका इस तेजोसि इस आवाहन मंत्रका अर्थ लिखते हैं हे गायत्रि तुम (तेजोसि) कांतिका कारण तेजहो (शुक्रमसि) प्रकाशमानहो (अमृतं असि) विनाश रहितहो (धाम) मनके लगानेका स्थान हो (नाम असि) प्राणियोंके झुकानेवाली हो यानी आपके उपासकको

मस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृ-
ष्टं देवयजनमसि ॐगायत्र्यस्येकपदीद्विपदी
त्रिपदी चतुष्पद्यपदसिनहिपद्यसेनमस्ते तुरी
इस विनियोग सहित मंत्रको पढकर गायत्री आ-
वाहन करे फिर गायत्र्येकपदी इस ऊपर लिखे मंत्रको

देखकर सब आदमी झुकते हैं (देवानां अनाधृष्टं प्रियं असि) देवताओंके सर्वोत्तम प्रियहो और (देवयजनं असि) देवता-ओंके पूजनके साधन हो इस मंत्रका अर्थ हो चुका आगे गायत्र्यस्येकपदी इस उपस्थान मंत्रका अर्थ (गायत्र्यस्ये-कपदी द्विपदी त्रिपदी) हे गायत्रि ! तुम त्रिलोकीरूप पद करके एक पदी हो । त्रयीविद्या रूपपद करके द्विपदी हो प्राण आदि पद करके त्रिपदीहो (चतुष्पद्यपदसि) सूर्य्य मण्डलके भीतर विद्यमान पुरुष रूपसे तुम चतुष्पदी हो इनही चार पदोंसे आप उपासकों करके जानी जाती हो अन्यथा नहीं इससे अपदहो (दर्शताय) दर्शनके योग्य (परोरजसे) रजो गुणसे परे वर्तमान यानी शुद्ध सत्व स्वरूप (तुरीयाय पदाय) चतुर्थ पद यानी ब्रह्मा विष्णु शिव इन तीनोंसे भिन्न ब्रह्मस्वरूप आपको या कारणरूप तीन

यायदर्शतायपदायपरोरजसेसावदोमाप्रापत् ॥ ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहि ॥ धियोयोनः प्रचोदयात् ॥
ॐ उत्तमेशिखरेदेविभूम्यांपर्वतमूर्धनि ॥
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञातागच्छदेवियथासुखम् ॥
पढकर गायत्रीका उपस्थान करे यानी गायत्रीकी स्तुति करे फिर चित्तको एकाग्र करके गायत्री मंत्र-का जप करे जप करनेका एक गायत्री मंत्र ऊपर लिखा हुआ है यथाशक्ति जप करके फिर उत्तमे शिखरे इस ऊपर लिखे मंत्रसे विसर्जन करे (अलम्)

उपाधियोंसे रहित ईशपद आपको नमस्कार है जिस नमस्कारके करनेसे (असौ) यह तुम्हारी प्राप्तिमें विघ्न करनेवाला जो पाप और (अदः) इस पापका काम जो तुम्हारी प्राप्तिमें विघ्न करना सौ (माप्रापत्) मुझको न प्राप्तहो अर्थात् मैं परब्रह्मस्वरूप आपकोप्राप्तहोऊं और गायत्री मंत्रका अर्थ पहिले लिख आये हैं इस वास्ते नहीं लिखते ॥ विसर्जन मंत्रका अर्थ पृथिवीपर मेरुपर्वत है उसके उत्तमशिखरपर गायत्री देवी स्थितहै इस कारण हे देवि ! ब्राह्मण जो आपके उपासकहैं आपके अनुग्रहसे प्रसन्न हैं तिनके लिये सम्मतिका प्रयोग करके सुखसे अपने स्थान उस उत्तमशिखरको पधारिये इति ॥

श्रीः ।

अथ देवर्षिपितृतर्पणम् ।

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ तर्पणविधिःप्रारभ्यते ॥ तत्रादौसंकल्पः॥पूर्वाभिमुखोभूत्वासव्येनाचम्य अपवित्रः पवित्रोवासर्वाऽवस्थांगतोपिवा ॥ यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरःशुचिः ॥ १ ॥ द्वौदर्भौदक्षिणेहस्ते सव्येत्रीण्यासने तथा ॥ पादमूलेशिखायांचसकृद्यज्ञोपवीतके ॥ २ ॥ ॐतत्सत् श्रीमद्भगवतोमहापुरुषस्यविष्णोराज्ञयाप्रवर्तमानस्याद्यब्रह्मणोद्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपेभरतखंडे रामराज्येआर्यावर्तैकदेशांतर्गतेअमुकनाम्निक्षेत्रेवैवस्वतमन्वंतरेअष्टाविंशतितमेयुगे कलियुगेकलिप्रथमचरणे महानद्यागोदावर्यादक्षिणेतीरेदेवब्राह्मणानांसन्निधौ अमुकशके

अमुकनाम्नि संवत्सरेअमुकायने अमुकगोले अमु-
कर्तौ मासानामुत्तमे महामांगल्ये अमुकमासे अ-
मुकपक्षेअमुकतिथौ अमुकवासरेअमुकनक्षत्रयोग
करणलग्नमुहूर्तान्वितायाममुकाऽमुकराशिवेला-
यामेवंगुणविशिष्टायांपुण्यतिथौअमुकगोत्रोऽमुक
नामाहंममोपात्तदुरितक्षयद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं
देवर्षिपितृतर्पणं करिष्ये इतिसंकल्प्य ॐब्रह्मादयो
देवाआच्छन्तुगृह्णन्त्वेतान्जलाञ्जलीनित्यावाह्य
देवतीर्थेनअक्षतोदकेनैकैकांजलिनातर्पयेत् ॥ तद्य
था॥ब्रह्मातृप्यताम् विष्णुस्तृप्यताम् रुद्रस्तृप्यता
म् प्रजापतयस्तृप्यन्ताम् देवास्तृप्यन्ताम् छन्दां
सितृप्यन्ताम् ऋषयस्तृप्यन्ताम्वेदास्तृप्यन्ताम्
पुराणाचार्य्यास्तृप्यन्ताम् गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्
इतराचार्य्यास्तृप्यन्ताम् संवत्सराःसावयवा-
स्तृप्यन्ताम्देव्यस्तृप्यन्ताम्अप्सरसस्तृप्यन्ताम्
देवानुगास्तृप्यन्ताम् नागास्तृप्यन्ताम् सागरास्तु

प्यन्ताम् पर्व्वतास्तृप्यन्ताम् सरितस्तृप्यन्ताम् मनुष्यास्तृप्यन्ताम्यक्षास्तृप्यन्ताम् रक्षांसितृप्यन्ताम् पिशाचास्तृप्यन्ताम्सुपर्णास्तृप्यन्ताम् भूतानितृप्यन्ताम् पशवस्तृप्यन्ताम् वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् ओषधयस्तृप्यन्ताम् भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम् इतियवोदकेनैकैकमञ्जलिं देवतीर्थेन दद्यात् ॥ ततःमरीचिस्तृप्यताम् अत्रिस्तृप्यताम् अंगिरास्तृप्यताम् पुलस्त्यस्तृप्यताम् पुलहस्तृप्यताम् क्रतुस्तृप्यताम् प्रचेतास्तृप्यताम् वसिष्ठस्तृप्यताम् भृगुस्तृप्यताम् नारदस्तृप्यताम् ॥ देववत् ॥ ततउत्तराभिमुखो निवीतीप्राजापत्येन तीर्थेनाञ्जलिद्वयेन तर्प्पयेत् ॥ सनकादयःसप्तमनुष्याआगच्छन्तुगृह्णन्त्वेताञ्जलाञ्जलीन् ॥ सनकस्तृप्यताम् २ सनन्दनस्तृप्यताम्२सनातनस्तृप्यताम् २ कपिलस्तृप्यताम् २ आसुरिस्तृप्यताम् बोढुस्तृप्यताम् २ पञ्चशिखस्तृप्यताम् ॥ २ ॥

ततोऽपसव्यम् ।तिलमिश्रितंजलंगृहीत्वा दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुर्जलाञ्जलित्रयेण पितृतीर्थेनतर्प्पयेत्॥कव्यवाडनलादयोदिव्यपितर आगच्छन्तुगृह्णन्त्वेताञ्जलाञ्जलीन् ॥ कव्यवाडनलस्तृप्यतामिदंजलंतस्मैस्वधा ३ सोमस्तृप्यतामिदंजलंतस्मैस्वधा ३यमस्तृप्यतामिदंजलंतस्मैस्वधा ३ अर्यमातृप्यतामिदंजलं तस्मैस्वधा ३ अग्निष्वात्तास्तृप्यन्तामिदंजलंतेभ्यःस्वधा ३ सोमपास्तृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यःस्वधा३ बर्हिषदस्तृप्यन्तामिदंजलंतेभ्यःस्वधा३ततोयमादिचतुर्दशमूर्तय आगच्छन्तुगृह्णन्त्वेताञ्जलाञ्जलीन्॥यमायनमः ३ धर्म्मराजायनमः३ मृत्यवेनमः३ अन्तकायनमः३वैवस्वतायनमः ३कालायनमः३सर्वभूतक्षयायनमः३ औदुम्बरायनमः३दध्नायनमः३ नीलायनमः३ परमेष्ठिनेनमः३ वृकोदरायनमः ३ चित्रायनमः ३ चित्रगुप्तायनमः ३ इहागच्छन्तुमे

पितरइदंगृह्णन्तुमेजलम् ॥ अमुकगोत्रः अस्मत्पि-
ताऽमुकनामा वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं जलंतस्मै
स्वधा ३ अमुकगोत्रोऽस्मत्पितामहोऽमुकनामा
रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदंजलं तस्मैस्वधा३अमुक
गोत्रः अस्मत्प्रपितामहोऽमुकनामाआदित्यस्वरू
पस्तृप्यतामिदंजलं तस्मैस्वधा३अमुकगोत्राअ
स्मन्माताऽमुकीदेवीतृप्यतामिदंजलंतस्यैस्वधा३
अमुकगोत्राअस्मत्पितामही अमुकीदेवीतृप्यता-
मिदं जलतस्यैस्वधा ३अमुकगोत्राअस्मत्प्रपिता-
मही अमुकीदेवी तृप्यतामिदं जलं तस्यैस्वधा ३
अमुकगोत्रोऽस्मन्मातामहोऽमुकनामा वसुस्वरूप
स्तृप्यतामिदंजलन्तस्मैस्वधा३ अमुकगोत्रोऽस्म
त्प्रमातामहोऽमुकनामारुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदंज
लंतस्मैस्वधा३ अमुकगोत्रोऽस्मद्वृद्धप्रमातामहो
मुकनामा आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदंजलंतस्मै
स्वधा३अमुकगोत्रा अस्मन्मातामही अमुकीदेवी

तृप्यतामिदंजलंतस्यैस्वधा ३ अमुकगोत्राअस्म-
त्प्रमातामहीअमुकीदेवी तृप्यतामिदंजलंतस्यैस्व
धा ३ अमुकगोत्रा अस्मद्वृद्धप्रमातामहीअमुकी
देवीतृप्यतामिदंजलंतस्यैस्वधा ॥३॥ ततआचा-
र्य्यादीन्नामगोत्राकारैस्तर्प्पयेत् ॥ ततः येबान्धवा
बान्धवायेऽन्यजन्मनिबान्धवाः ॥तेसर्व्वेतृप्तिमा
यान्तु येऽस्मत्तोयाभिकाङ्क्षिणः ॥१॥येमेकुलेलु
प्तपिण्डाःपुत्रदारविवर्जिताः॥ तृप्यन्तुपितरःसर्व्वे
मातृमातामहादयः ॥२॥ अतीतकुलकोटीनां स-
प्तद्वीपनिवासिनाम् आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु
तिलोदकम्॥३॥इतिमंत्रैःपृथक्सतिलमुदकंदद्यात्
ततःयेचास्माकंकुलेजाता अपुत्रागोत्रिणोमृताः॥
तेपिबन्तुमयादत्तंवस्त्रनिष्पीडनोदकम् ॥४॥ इति
वस्त्रंनिष्पीड्य सव्येनाचम्यसूर्यादिभ्योऽर्घ्यंदद्या-
त्॥एहिसूर्य्यसहस्रांशो तेजोराशेजगत्पते॥अनु-
कम्पयमांभक्त्यागृहाणार्घ्यंनमोऽस्तुते॥५॥ब्रह्मा

मुरारिस्त्रिपुरान्तकारिर्भानुश्शशीभूमिसुतोबुधश्च।
गुरुश्चशुक्रःशनिराहुकेतवस्सर्व्वेग्रहाश्शान्तिकरा
भवन्तु ॥ ६ ॥ इतिदेवर्षिपितृतर्पणं समाप्तम् ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ अथगोग्रासः॥सुरभिर्माता
सुरभिःपिता सुरभिःपितृतारिणी॥गोग्रासंचमया
दत्तं सुरभेप्रतिगृह्यताम् ॥१॥ हन्तकारः ॥ हन्त-
कारंमयादत्तं पितृनुद्दिश्य हेतवे ॥ गृहाण त्वं कृ-
पांकृत्वा क्षेमायुष्यंकरोतुमे॥१॥ अथातिथिपूज-
नम्॥अतिथेर्दर्शनं पुण्यंविष्णुमूर्तिर्विराजते॥पि-
तृनुद्दिश्यदीयन्ते पितृदेवेयथार्पणात् ॥१॥ अप-
सव्यम्॥यमोसियमदूतोसिवायसोसिमहाबल ॥
अहोरात्रकृतंपापंबलिंभक्षन्तुवायसाः॥१।श्वानब
लिः।श्वानमार्ज्जारकीटादिबलिभुग्भ्यश्चदीयताम्
ममक्षेमायचारोग्यंरक्षरक्ष कुलंमम॥१।समाप्तम्॥

इति
संध्योपासन–भाषाटीका
देवर्षिपितृतर्पणसमेत ।

पुस्तकें मिलने के स्थान :–

१. खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
सातवीं खेतवाड़ी खम्बाटा लेन
बम्बई–४०० ००४

२. गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्या बाई चौक, कल्याण,
(जि० ठाणे–महाराष्ट्र)

३. खेमराज श्रीकृष्णदास, चौक–वाराणसी (उ. प्र.)